एस्चुअरीन केकड़े की नई प्रजाति

हाल ही में शोधकर्त्ताओं ने तमलिनाडु के कुड्डालोर ज़िले में**वेल्लार नदी के मुहाने (एक ऐसा क्षेत्र जहाँ नदी समुद्र से मलिती है) के पास परंगीपेट्टई के मैंग्रोव में एस्चुअरीन केकड़े की एक नई प्रजाति की खोज की है।**

- **शिक्षा और अनुसंधान में अन्नामलाई विश्वविद्यालय के 100 वर्ष पूरा करने के सम्मान में इस प्रजाति का नाम 'स्यूडोहेलसि अन्नामलाई' रखा गया है।**

//

स्यूडोहेलसि अन्नामलाई:

- **परिचय:**
  - **सेंटर ऑफ एडवांस्ड स्टडी (CAS)** द्वारा उच्च अंतर्ज्वारीय क्षेत्रों से प्राप्त किये गए स्यूडोहेलसि प्रजाति का यह पहला रिकॉर्ड है।
    - अब तक इस प्रजाति में **केवल दो प्रजातियों** अर्थात् **"स्यूडोहेलसि सबक्वाड्राटा" और "स्यूडोहेलसि लैट्रेली" की पुष्टि की गई है।**
- **भौगोलिक वितरण:**
  - यह प्रजाति **भारतीय उपमहाद्वीप और पूर्वी हिंद महासागर के आसपास पाई जाती है।**
- **विशेषता:**
  - **स्यूडोहेलसि अन्नामलाई** को उसके **गहरे बैंगनी और गहरे भूरे रंग** से पहचाना जा सकता है, जिसमें अनियमित हल्के भूरे या सफेद धब्बे होते हैं, जो हल्के भूरे रंग के चेलिपिड के साथ पीछे के कैरापेस पर होते हैं।
  - यह प्रजाति आकार में **छोटी** है और इसकी अधिकतम चौड़ाई 20 मिमी. होती है।
  - अन्य अंतर्ज्वारीय केकड़ों की तरह यह प्रजाति तेज़ी से आगे बढ़ सकती है लेकिन आक्रामक नहीं होती है।
- **आवास:**
  - यह प्रजाति **मैंग्रोव के कीचड़ भरे किनारों** पर रहती है। **एविसेनिया मैंग्रोव के न्यूमेटोफोरस के निकट इनके द्वारा आवास के लिये**

बनाए बिल पाए गए थे।
   - प्रवेश के पास बड़े-बड़े छड़ के आकार वाले इन बिलों की गहराई 25-30 से.मी. होती है और उनमे कई शाखाएँ होती है।
- **महत्त्व:**
   - भारत में स्यूडोहेलिस की उपस्थिति **पश्चिमी हिंद महासागर और पश्चिमी प्रशांत महासागर के बीच इसके वितरण के अंतराल से संबंधित है।**
   - नई प्रजातियों की खोज इस बात को **साबित करती हैं कि पूर्वी हिंद महासागर में कुछ समुद्री जीव भौगोलिक रूप से अलग-थलग हैं।**

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/new-species-of-estuarine-crab-1